✳ **प्रथम अध्याय** ✳

कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रास्ताविक

1.1 व्यक्ति परिचय

1.1.1 कमलेश्वर का जन्म और माता-पिता

1.1.2 बचपन

1.1.3 शिक्षा

1.1.4 विवाह

1.1.5 परिवार

1.2 व्यक्तित्व

1.2.1 कमलेश्वर का बाह्य रूप

1.2.2 कमलेश्वर का आंतरिक रूप

1.2.2.1 प्रतिभा संपन्न

1.2.2.2 जिद्दी तथा स्वाभिमानी

1.2.2.3 बहुज्ञ

1.2.2.4 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.3 कृतित्व

1.3.1 कहानीकार

1.3.2 उपन्यासकार

1.3.3 नाटककार

1.3.4 समीक्षात्मक ग्रंथ

1.3.5 यात्रावृत्त

1.3.6 आत्मकथात्मक संस्मरण

1.3.7 साक्षात्कार

1.3.8 संपादन

1.3.9 संस्मरण

1.3.10 पत्रकारिता

1.4 सेवाकार्य

1.5 सामान्य जन जीवन के रचनाकार

1.6 साथियों ने ही कमलेश्वर को कमलेश्वर बनाया

1.7 कमलेश्वर और दूरदर्शन

1.8 कमलेश्वर और उनकी फिल्में

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

✳ **प्रथम अध्याय** ✳

कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रास्ताविक

स्वातंत्र्योत्तर काल के हिंदी जगत के प्रमुख साहित्यकारों में कमलेश्वर का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। आज जितने भी हिंदी प्रेमी हैं वे सब कमलेश्वर को अच्छी तरह से पहचानते हैं। कमलेश्वर एक सफल उपन्यासकार है किंतु कहानीकार के रूप में उन्होंने बहुत ख्याति अर्जित की है। उनके साहित्य का तत्कालीन समाज पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा है। हिंदी कहानी को नया मोड़ देने का महत्त्वपूर्ण प्रयास कमलेश्वर ने किया है। नई कहानी के आंदोलन को सफल बनाने में भी उनका योगदान रहा है। कमलेश्वर कहानी और उपन्यास में ही फँसे नहीं रहे तो उन्होंने पत्रकारिता, फिल्मों के संवाद तथा दूरदर्शन के लिए नए-नए प्रोग्राम आदि में भी दखल दी है।

किसी भी साहित्यिक कृति को सम्यक ढंग से समझने तथा उस पर विचार-विमर्श के लिए उस कृति के कृतिकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन आवश्यक होता है। कोई भी साहित्यिक अपने समय की परिस्थितियाँ एवं यथार्थ से प्रेरित होता है और सार्थक साहित्य का सृजन करता है। अतः साहित्यिक कृति के वस्तुपरक मूल्यांकन के लिए उसकी परिस्थितियों, अनुभवों, प्रेरणाओं और विचारों आदि का विश्लेषण आवश्यक होता है।

सामान्यतः कमलेश्वर का समग्र परिचय प्राप्त करने के लिए उपलब्ध सामग्री को तीन भागों में विभाजित करते हैं।

1. व्यक्ति परिचय।
2. व्यक्तित्व।
3. कृतित्व।

1.1 व्यक्ति परिचय

व्यक्ति परिचय के अंतर्गत कमलेश्वर का जन्मस्थान उनका जीवन परिचय, बचपन, शिक्षा, विवाह, माता-पिता नौकरियाँ आदि का विवेचन किया है।

1.1.1 कमलेश्वर का जन्म और माता-पिता

कमलेश्वर का जन्म सन् 6 जनवरी, 1932 को मैनपुरी, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनके पिताजी का नाम जगदंबा प्रसाद था। जगदंबा प्रसाद की दो पत्नियाँ थी। सुश्री शांतिदेवी की कोख से कमलेश्वर का जन्म हुआ।

1.1.2 बचपन

कमलेश्वर को बचपन से ही अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करना पड़ा। वे जब तीन साल के थे, तब उनके पिताजी का दिल का दौरा पड़ने से देहांत हुआ। उन्हें पिताजी का चेहरा भी ठीक तरह से याद नहीं रहा।

पिताजी की मृत्यु के बाद उनका एक मात्र सहारा था बड़ा भाई सिद्धार्थ। लेकिन उसकी भी अचानक मृत्यु हो गयी और कमलेश्वर पर मानों पहाड़ ही टूट पड़ा। "जो बीत गया था, बहुत खुशनुमा और आरामदेह होगा क्योंकि सिद्धार्थ बहुत होनहार थे।... तभी सिद्धार्थ की मृत्यु हो गयी।... और अमीर कहे जाने वाले घर में गरीब की तरह रहना, खाना खाकर भी भूखा उठना, अकुलाहट भरे दुखों के बीच हँस सकता, बच्चा होते हुए भी व्यस्को की तरह निर्णय ले सकना मेरी मजबूरी बन गयी थी।"[1] इसप्रकार कमलेश्वर को अभावग्रस्त बचपन व्यतीत करना पड़ा।

1.1.3 शिक्षा

कमलेश्वर की प्रारंभिक शिक्षा मैनपुरी हायस्कूल तथा गवर्नमेंट हायस्कूल, मैनपुरी में संपन्न हुई। बचपन की पढ़ाई के वक्त उन्हें दिक्कतों का बूरी तरह से सामना करना पड़ा। पढ़ाई में उन्हें दिलचस्पी थी, किंतु मास्टरजी ने उन्हें बार-बार कटुक्तियों द्वारा नाउम्मीद बनाया। अपनी पढ़ाई के लिए वे किताब तक खरीद न सके।

कमलेश्वर ने सन् 1950 में के.पी.की परीक्षा पास की। इसके बाद सन्1954 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए.की परीक्षा उत्तीर्ण की। भौतिक, रसायन, गणित, अर्थशास्त्र, भूगोल आदि कई विषयों में उनकी दिलचस्पी का परिचय मिलता है। प्रयाग विश्वविद्यालय से उन्होंने हिंदी में एम.ए.की उपाधि हासिल की और लेखन के क्षेत्र में पदार्पण किया। तब से आज तक वे इसी कार्य में डूबे हुए नजर आते हैं।

1.1.4 विवाह

कमलेश्वर का विवाह सन् 1958 में 'गायत्री' के साथ उत्तर प्रदेश के फत्तेहगड़ में हुआ। तब उनकी उम्र 27 साल की थी। कमलेश्वर अपनी पत्नी 'गायत्री' को एक सच्चा दोस्त मानते हैं। जो हक मोहन राकेश,दुष्यंत और अपनी माँ को था, वही हक गायत्री ने भी निभाया। गायत्री में समझदारी, धीरज और आंतरिक शक्ति है।

1.1.5 परिवार

कमलेश्वर के परिवार में उनके पिता जगदंबा प्रसाद, माता शांतिदेवी और सात भाई थे। इनमें सबसे छोटे कमलेश्वर ही थे। चार भाइयों को उन्होंने देखा नहीं।

जब कमलेश्वर तीन साल के थे तभी पिताजी का देहांत हो गया। पिताजी की मृत्यु के बाद घर के हालात गिरते गए। उनके शब्दों में "वह लड़ाई का जमाना था। सामंती घर बुरी तरह ढह चुका था। नौकर-चाकर बिदा हो चुके थे।... माँ रात ढाई-तीन बजे उठकर हाथों में कपड़ा लपेटकर चक्की से आटा पिसती, बरतन धोती और सुबह होते-होते पुराने जमींदार घराने की हो जाती। गरीब लोगों के घावों पर मरहम लगाती और रात को सूने कमरे में बैठकर चुपचाप रोया करती।"[2]

अब कमलेश्वर के परिवार में उनकी पत्नी गायत्री बेटी ममता और पोता अनंत रहते है।

1.2 व्यक्तित्व

किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्व दूसरों पर अमीट छाप छोड़ जाता है। व्यक्तित्व शारीरिक एवं मानसिक प्रवृत्तियों का सम्मुचय होता है। जो किसी भी व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों से अलग करता है। अतः अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से कमलेश्वर के व्यक्तित्व को बाह्य एवं आंतरिक पक्षों में विभाजित कर देखना उचित होगा।

1.2.1 कमलेश्वर का बाह्य रूप

कमलेश्वर के सिर पर घने लंबे बाल, आँखों पर चष्मा, शक्ल पर हँसी उनका कद छोटा है। आँखे मँझाने आकार की, बड़ा और खूबसूरत माथा और भौहें। चुस्त-दुरुस्त और मोहक चेहरा। श्याम रंग सहज स्वभाव आदि कमलेश्वर के बाह्य व्यक्तित्व में

समाहित है।

1.2.2 आंतरिक रूप

आंतरिक व्यक्तित्व के रूप में कमलेश्वर निड़र तथा स्वाभिमानी व्यक्ति हैं। साथ में भावुक और ईमानदार, संघर्षशील, प्रतिभासंपन्न, स्पष्टवादी दृढ़ निश्चयी, संयमी और कार्यक्षमता के धनी हैं। उनके आंतरिक व्यक्तित्व कुछ पहलू निम्नानुसार हैं -

1.2.2.1 प्रतिभा संपन्न

कमलेश्वर हिंदी के प्रसिद्ध एवं प्रतिभासंपन्न कथाकार हैं। पहले उन्हें साहित्य लेखन में रुचि नहीं थी। आगे क्या करना है इसके बारे में उन्होंने सोचा नहीं था। जिस जमाने में उन्होंने लिखना शुरू किया था और जिस संघर्ष से वे निकल आए थे उसने कमलेश्वर को नितांत अंर्तमुख बना दिया था। फलतः वह गंभीरतापूर्वक कहानी लेखन की ओर उन्मुख हुए और उन्हें सफलता भी मिल गयी। उन्होंने साहित्य के माध्यम से मानसिक, बौद्धिक, राजकीय, सामाजिक आदि रुढ़ियों को तोड़ने का प्रयास किया है।

कमलेश्वर प्रतिभासंपन्न साहित्यकार हैं। वे एक ही बैठक में कहानी को पूरा करते हैं। कमलेश्वर स्वयं कहते हैं, ''मैं अगर एक सिटिंग में कहानी को खत्म कर नहीं सका तो वह कहानी मुझ से फिर कभी पूरी नहीं हो पाती। चाहे आठ-दस घंटे लगे मगर यह सिलसिला लगातार होता है। बीच में मैं नहा लूँगा, कोई आया तो बातचीत भी हो जायेगी। मगर बाहर नहीं जाता। जब कहानी पूरी हो जाती है तब निकल पाता हूँ। उपन्यास भी बस सात-आठ बैठकों में। यों भी मेरे उपन्यास छोटे-छोटे हैं।''[3]

अद्भुत प्रतिभा और कडी मेहनत से आज कमलेश्वर का नाम सभी जगह चर्चा में रहा है। वे एक सशक्त लेखक, संपादक, आलोचक संवेदक और वक्ता हैं। इन सबके मूल में उनकी प्रतिभा निहित है।

1.2.2.2 जिद्दी तथा स्वाभिमानी

बचपन से ही कमलेश्वर बड़े स्वाभिमानी और जिद्दी है। बचपन में कमलेश्वर जब मैनपुरी कस्बे में पढ़ाई करते थे, उसी समय सरकारी स्कूल के उनके मास्टर कस्बे के बड़े-बड़े अफसर के लड़कों को मानीटर बनाते थे। चाहे वे होशियार, शालीन तथा

नम्र न हो फिर भी उन्हें मानीटर बनाया जाता थ। यह बात उनसे सही नहीं जाती थी। वे अपनी सारी उदासीनता के बावजूद दर्जे में ज्यादातर अव्वल आते थे। लेकिन मास्टर जी उन्हें कभी मानीटर नहीं बनाते थे।

कमलेश्वर दूरदर्शन में नौकरी करते थे। उसी समय उनके कामकाज में किसी ने हस्तक्षेप या बाधा डाली तो वे उसे सह नहीं पाते थे। अपने विरोध में जब काम होगा उसी समय वे इस्तीफा देकर चले जाते। कमलेश्वर ने स्वयं कहा है कि, ''दूरदर्शन में विस्तार का प्रस्ताव था। मैं भारतीय कौशल्य का हिमायती था। ब्रह्मचारी जी की पहुँच सोधे पी.एम.तक थी। वे चाहते थे आयतित अड़चन यहाँ से शुरू हुई। ब्रह्मचारी से साल भर पहले से तनातनी थी। वे योग पर कार्यक्रम देखाने का दबाव डाल रहे थे, जिसे मैंने इन्कार कर दिया था। ब्रह्मचारी चाहते थे कि योग किस तरह शारीरिक सुख प्राप्ती का मार्ग प्रशस्त करता है। इसे बताया जाए। मैं उसे पचा नहीं पाया था। पुरानी पेंच थी। साल भर बाद एक प्रोजेक्ट को जो मेरे द्वारा रिकमेंडेड था। थोड़ा बदल देने का इशारा हुआ। मैं सचिव के कमरे में गया। सचिव मुझ से बजुर्ग थे उन्होंने समझाया कि बैठो और थोडी सी फेर बदल कर दो। मैंने एक सफेद कागज माँगा उन्होंने समझा कि मै फेर-बदल के लिए माँग रहा हूँ। मैंने तीन मिनट में उसी कागज पर इस्तीफा लिख कर दे दिया। सचिव महोदय हतप्रभ रह गये।''[4]

इस प्रकार कमलेश्वर बेहद जिद्दी और स्वाभिमानी आदमी है।

1.2.2.3 बहुज्ञ

कमलेश्वर कथाकार,आलोचक और सक्षम संपादक भी हैं। केवल साहित्य के ही क्षेत्र में वे मशहूर नहीं हैं तो वे बहुआयामी हैं। वे किसी भी विषय पर दो-तीन घंटों तक चर्चा करना चाहे तो उनके लिए कोई कठिन कार्य नहीं है।

वे रसोईघर से लेकर दिल्ली की राजनीति तक के विषयों पर आसानी से चर्चा करते रहते हैं। बहुज्ञता उनके व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। उनके मित्र शोरिराजन के अनुसार ''जब कभी कमलेश्वर को देखता हूँ, वह मुझे लगता है एक दख्खिनी किसान का जवान लड़का। वही चुस्ती। जिंदादिल। वही मेहनत परस्ती। वही सादगी, वह चातुरी, वह भावुकता, वही हिम्मत, वही वाचालता, वही आत्मविश्वास, वही

स्वाभिमान, वही स्नेहशीलशालीन प्रवृत्ति। मैंने समझ रखा था कि क्या यह लेखन के सिवा और कुछ जानता लेकिन धीरे-धीरे पता चला कि इनका अध्ययन इतना विशाल, गहरा और विविध है कि कोई विषय इसकी समझ से परे नहीं है। गोली मारिए साहित्य को, रसोई के बारे में बात छेड़िए बस खानसामा कमलेश्वर आपको तीन घंटे तक लगातार पचासों तरह-तरह की खाने की चीजों की फेहरिस्त पकाने के तौर-तरिके के साथ ऐसे पेश करेंगे कि आप मुँह-बाये ताकते रह जायेंगे। इसके अलावा आप क्या बात करना चाहेंगे आदलती मामलों पर? लेटेस्ट विज्ञान की तरक्की पर, खेत खलिहानों पर? दर्शनशास्त्र पर? सौंदर्यशास्त्र पर या देश-विदेश के चूटकलों पर? विलायती घुमक्कड़ी पर? फिल्मी दुनिया पर या खेल-कूद पर? बिना बोरियत के आप को दो-तीन घंटे तक सविवरण सुनाने की दक्षता इस कमलेश्वर में, किसान के पट्ठे के पास है।''[5] कमलेश्वर सभी क्षेत्र में रुचि लेते हैं। इस प्रकार कमलेश्वर बहुज्ञ व्यक्ति हैं।

1.2.2.4 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

कमलेश्वर लेखन में एक असाधारण व्यक्ति है। लेकिन व्यक्तिगत जीवन में वे साधारण व्यक्तित्व के है। वे हमेशा अपने साथियों से मिलजुलकर रहते है। और उन्हें सहयोग भी देते हैं। दूसरों की मदद करना, उनके दुःख में शामिल होना तथा उनकी परेशानियाँ दूर करना उनके स्वभाव की विशेषता है। वे कडी मेहनत से अपने कार्य में सफलता प्राप्त करते हैं। वे एक खुशदिल खुशमिजाज और सुरुचिपूर्ण व्यक्ति हैं। उनके व्यक्तित्व के बारे में उनके मित्र दुष्यंतकुमार ठीक ही कहते हैं - ''औसत से कुछ छोटा कद और साँवला रंग। नाक-नक्शा तीखे और आँखों में ऐसा आकर्षण कि जिधर से देखिये बँधते चले जाइये। रेडिओ और टेलिविजन में नौकरी कर चुकने के कारण उसकी जबान, जो पहले भी मधुर थी, अब सधकर और मीठी हो गयी है। पास के पच्चास किसी को देकर अपनी जरूरत के लिए पचीस रुपये के इंतजाम सिलसिले में वह परेशान घूमता हुआ मिल सकता है। वह किसी बीमार के सिरहाने बैठा हुआ भी मिल सकता है, सस्ती दुकान में चाय पीता हुआ मिल सकता है। दूसरों के दुःख में दुःखी, उनकी परेशानियाँ से सुलझता और अपने दुःखों में हँसता हुआ भी मिल सकता है। घर पर मिलना चाहे तो रात के दो बजे से पहले नहीं मिल सकता।''[6]

असाधारण, मददगार, खुशदिल, कठोर परिश्रमी, हँसमुख, घुमक्कड़ तथा मीठी जंबान जैसी अनेक बाते कमलेश्वर के व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं।

1.3 कृतित्व

हिंदी साहित्य जगत में 'कमलेश्वर' वह नाम है जो छठे दशक में बड़े जोर-शोर से सुना गया और लगातार सुना जा रहा है। कमलेश्वर के बगैर हिंदी साहित्य की चर्चा पूरी नहीं हो सकती।

कमलेश्वर अन्य उपनामों से भी लिखते हैं। कभी वे विप्रगोस्वामी तो कभी हरिश्चंद्र कभी सौमित्रगोस्वामी तो कभी पर्यवेक्षक, लेकिन हिंदी संसार उन्हें 'कमलेश्वर' नाम से ही जानता है।

1.3.1 कहानीकार कमलेश्वर -

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानीकारों में कमलेश्वर सर्वथा अग्रणी रहे हैं। एक ऊंचे दर्जे के कहानीकार की हैसियत से ही उन्हें हिंदी साहित्य जगत में विशेष ख्याति प्राप्त है। वैसे देखा जाय तो कमलेश्वर मूलतः कहानीकार है बाद में सब कुछ।

उनकी सबसे पहली कहानी 'कामरेड' जो एटा के 'अप्सरा' पत्रिका में प्रकाशित हुई है। मगर यह कहानी उनके किसी भी कहानी संग्रह में नहीं है। कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ निम्नलिखित है -

राजा निरबंसिया, खोई हुई दिशाएँ, गरमियों के दिन, बयान मांस का दरिया, नीली झील, बदनाम बस्ती, साँप, लाश, जोखिम राते, दिल्ली में एक मौत, इतने अच्छे दिन आदि।

कमलेश्वर के प्रमुख कहानी संग्रह निम्नानुसार है -

1. राजा निरबंसिया
2. कस्बे का आदमी
3. खोई हुई दिशाएँ
4. मांस का दरिया

5. जिंदा मुर्दे

6. बयान

7. मेरी प्रिय कहानियाँ

8. कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ

9. जॉर्ज पंचम की नाक

10. कथा प्रस्थान

11. इतने अच्छे दिन

12. कोहरा

13. दस प्रतिनिधि कहानियाँ

इसके अलावा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में कमलेश्वर की कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी है। 'मांस का दरिया' में कमलेश्वर कहते हैं कि, ''कला के स्तर पर कहानी मेरे लिए एक बहुत ही कठिन विधा है। हर कहानी एक चुनौती बनकर सामने आती है और उसके सब सूत्रों को संभालने में नसे फटने लगती है। यह कठिन परीक्षा का समय होता है।''[7]

1.3.2 उपन्यासकार कमलेश्वर

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य जगत में कमलेश्वर एक सफल उपन्यासकार के रूप में भी जाने जाते हैं। उनके उपन्यासों का समाज से गहरा संबंध रहा है। कमलेश्वर ने एक सामान्य वर्ग को केंद्र में रखकर उपन्यास लिखे हैं। उनके उपन्यासों की कथाभूमि कस्बों से लेकर बड़े शहर के विभिन्न क्षेत्रों तक फैली हुई है। उनके उपन्यास समाज के यर्थाथ को चित्रित करते हैं।

राजेंद्र यादव ने उनके बारे में लिखा है ''कमलेश्वर स्वयं सच नहीं बोलते मगर अपने युग और अपनी पीढ़ी के बारे में सच जरूर बोलते हैं। उनके पास जबान है और उन्हें ठीक तरह बात करने के लिए भी आती है। क्योंकि इनके सामने बड़े-बड़े जबानदार लोग चुप बैठते हैं।''[8]

कमलेश्वर के उपन्यास निम्नलिखित हैं -

1. वही बात
2. आगामी अतीत
3. एक सड़क सत्तावन गलियाँ
4. डाक बंगला
5. समुद्र में खोया हुआ आदमी
6. तीसरा आदमी
7. लौटे हुए मुसाफिर
8. काली आँधी
9. सुबह...दोपहर...शाम
10. रेगिस्तान
11. कितने पाकिस्तान

'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' यह उपन्यास 'हंस' पत्रिका में, 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' और काली आँधी 'साप्ताहिक हिंदुस्थान' में तथा 'आगामी अतीत' 'धर्मयुग' में छपे थे। 'वही बात' उपन्यास 'रविवार' पत्रिका में (कलकत्ता) धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था।

1.3.3 नाटक

कहानी और उपन्यास के साथ-साथ कमलेश्वर ने नाटक भी लिखे हैं। उनके प्रकशित नाटक निम्नलिखित हैं -

1.चारूलता

2.अधूरी आवाज

3. कमलेश्वर के बालनाटक

1.3.4 समीक्षा ग्रंथ

एक सफल समीक्षक के रूप में कमलेश्वर का नाम चर्चित है। वे मुख्य रूप से नई कहानी के आलोचक माने जाते हैं। उनके समीक्षात्मक प्रकाशित ग्रंथ -

1. नयी कहानी की भूमिका
2. मेरा पन्ना।

'नई कहानी की भूमिका' नामक अपनी पुस्तक में कमलेश्वर ने कहानी के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। नई कहानी का अस्तित्व, नई कहानी और आधुनिकता नई कहानी का रूपबंध आदि महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की चर्चा की है। 'नई कहानी की भूमिका' यह समीक्षात्मक ग्रंथ नई कहानी की पहचान में महत्त्वपूर्ण योग देता है।

कमलेश्वर ने 'सारिका' में समांतर और 'मेरा पन्ना' के माध्यम से अपनी समीक्षात्मक दृष्टि का परिचय दिया है।

1.3.5 यात्रावृत्त

कमलेश्वर के निम्नलिखित दो यात्रावृत्त हैं -

1. कश्मीर : रात के बाद
2. देश-देशांतर

1.3.6 आत्मकथत्मक संस्मरण

कमलेश्वर ने निम्नलिखित आत्मकथात्मक संस्मरण लिखे हैं -

1. आधार शिलाएँ - 1
2. जो मैंने जिया

1.3.7 साक्षात्कार

'मेरे साक्षात्कार' इस किताब के अंतर्गत साठ विद्वानों के द्वारा कमलेश्वर का लिया हुआ साक्षात्कार है। यह किताब कमलेश्वर के अष्ठ पहलू व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने में सहाय्यक सिद्ध है।

1.3.8 संपादन

कमलेश्वर द्वारा संपादित किताबें इस प्रकार हैं -

1. मेरा हमदम : मेरा दोस्त

2. समांतर - 1

1.3.9 संस्मरण

1. अपनी निगाह में।

1.3.10 पत्रकारिता

कमलेश्वर जी ने कहानी उपन्यास तथा अन्य विधाओं के साथ-साथ पत्रकारिता में भी दखल दी है।

1. नई कहानी	मासिक
2. सारिका	मासिक
3. गंगा	मासिक
4. कथामात्रा	मासिक
5. इंगित	साप्ताहिक
6. श्रीवर्षा	साप्ताहिक
7. दैनिक जागरण	समाचार पत्र

कमलेश्वर ने उपर्युक्त की पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया है। वे राजस्थान से प्रकाशित 'दैनिक भास्कर' पत्रिका के प्रधान संपादक के रुप में कार्य कर रहे हैं।

इस प्रकार कमलेश्वर का कृतित्व नजर आता है। कमलेश्वर एक साथ अपने आपको कई चीजों में फँसाएँ रखते हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में और चार चाँद लगाने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दे -

1.4 कमलेश्वर की नौकरियाँ

कमलेश्वर ने छोटी-मोठी कई प्रकार की नौकरियाँ की। उन्होंने प्रकाश-

प्रेस मैनपुरी में प्रूफ रीडिंग के साथ-साथ स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में लेखन का काम जारी रखा। उसके बाद 'जनक्रांति' कानपुर, इलाहाबाद में अवैतनिक कार्य और विधिवत लेखन भी किया। वैज्ञानिक मार्क्सवाद से परिचय की भूमिका तैयार की। 'बहार' मासिक इलाहाबाद में पचास रुपये महावार पर संपादन कार्य किया। शहनाज आर्ट साईन बोर्ड पेंटर्स इलाहाबाद में साईन बोर्ड पेंटिंग का काम अनियमित तनख्वाह पर किया। 'राजा आर्ट' इलाहाबाद में डिब्बों आदि की डिजाइने तैयार करने का काम भी अनियमित वेतन पर किया। कमलेश्वर ने 'ब्रुकबाण्ड' चाय के गोदाम में नाम बदलकर चौकीदारी की नौकरी भी की।

'कहानी' पत्रिका इलाहाबाद में सौ रूपये महावार पर नौकरी की। 'राजकमल प्रकाशन' इलाहाबाद में साहित्य संपादक के रूप में डेढ़ सौ रुपये महावार पर भी काम किया। उसके बाद सेंट जोसेफस् सेमिनरी इलाहाबाद में भारतीय तथा विदेशी केथालिक ब्रदर्स के लिए हिंदी अध्यापन का काम एक सौ पच्चीस रुपये महावार पर किया। कमलेश्वर ने 'श्रमजीवी प्रकाशन' की शुरूआत की। लेकिन 32 हजार का कर्जा चढ़ जाने के कारण सब कुछ ठप्प हो गया। इस तरह कमलेश्वर ने अनेक नौकरियाँ की जिससे उनका अनुभव संपन्न बन गया था।

1.5 सामान्य जन जीवन के रचनाकार

कमलेश्वर साधारण रूप में असाधारण व्यक्ति हैं। उनकी सामान्य जन की सामान्य जिंदगी की तलाश और उनकी अभिव्यक्ति अद्‌वितीय है। कला-कला के लिए में उनका उद्‌देश्य नहीं और नई कहानी की कल्पकता और सिर्फ साहित्यिक चकाचौंध या सजावट में उनका विश्वास है। उन्होंने वही लिखा जो वे चाहते हैं। उनके लिए कथा लेखन निर्णय का पर्याय है। उनके लेखन के बारे में डॉ.मनूभाई पांधी कहते हैं ''कमलेश्वर जन समुदाय की तकलिफों में हिस्सा बँटाने में कभी पीछे नहीं रहते। और सबसे ज्यादा ध्यान देने योग्य बात यह है कि उन्होंने बदलते हुए हालात में आम भारतीय की मानसिकता और व्यवहार के बदलाव को बड़ी खूबसूरती के साथ अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने कला साधनों को व्यापक बनाया है। अपने पात्र, गाँव, कस्बे नगरों, महानगरों के हैं। ये पात्र जिंदगी के पूरे बदलाव के साथ उनकी कहानियों में आये हैं। उन्होंने जो भी कुछ कहा है उसे अनावश्यक

दार्शनिकता जामा पहनाकर नहीं कहा।''[9]

कमलेश्वर छोटे और आम आदमी के रचनाकार हैं। उनकी कहानियों को पाठक अपनी स्थितियों से साक्षात्कार करते हैं। उनके पात्र सामान्य है, छोटे हैं। आज जनता में प्राप्त होते हैं। अतः उनकी कृतियों को आम आदमी की कृतियाँ मानना पड़ेगा।

1.6 साथियों ने ही कमलेश्वर को कमलेश्वर बनाया

कमलेश्वर 'जागरण' पत्रिका का संपादन करते थे। वे एक धर्म निरपेक्ष व्यक्ति है। वे समाज में एकता चाहते है। वे किसी के गुलाम नहीं बनना चाहते। उनके मित्र भी उन्हें इसी काम में सहयोग देते थे। कमलेश्वर और उनके साथी 'जागरण' का काम करते हैं। स्वयं कमलेश्वर ने कहा है कि ''मुझे जागरण का संपादक बनाया गया। मेरे साथ दृष्टि संपन्न लोगों की टीम थी। हमारा अपना नजरिया था। एक धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण सब जानते हुए भी मालिकों ने जब हिंदुवादी स्टैंड लिया तो मैंने इस्तीफा दे दिया और हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में पहली बार किसी मुद्दे को लेकर अलग हुए संपादक के साथ 28 लोग अलग हुए थे। मुझे अपने साथियों के प्यार ने ही कमलेश्वर बनाया है।''[10] मित्रों में दुष्यंत कुमार, राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, हरिशंकर परसाई आदि हैं।

1.7 कमलेश्वर और दूरदर्शन

कमलेश्वर और टेलिविजन का घनिष्ठ संबंध रहा है। कुछ बरसों पहले 'परिक्रमा' नामक कार्यक्रम कमलेश्वर ने दूरदर्शन के लिए शुरू किया था। 'परिक्रमा' के माध्यम से कमलेश्वर ने सामाजिक यथार्थ को आशा-निराशा को, सुख-दुःख को बखूबी से चित्रित किया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत उन्होंने पढ़े-लिखे, अनपढ़ सभी प्रकार के लोगों के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर उनसे तीखे सवाल करते और अपने आप सच्चाई सामने आती थी। कार्यक्रम से पहले कमलेश्वर भूमिका पेश करते जो बड़ी प्रभावपूर्ण रहती थी। मामूली आदमी का भी साक्षात्कार वे इस ढंग से लेते की देखनेवाले और सुननेवाले अचरज में पड़ जाते थे। 'परिक्रमा' इस कार्यक्रम को 'युनेस्को' द्वारा दुनिया के 10 सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रमों में रेखांकित किया है। दूरदर्शन के लिए उनका नया कार्यक्रम 'दृष्टिकोन' रहा, जो अयोध्या से जुड़ा है, यह कार्यक्रम भी लोगों ने बेहद पसंद किया।

कमलेश्वर भारतीय दूरदर्शन के प्रथम स्क्रिप्ट रायटर (1959) के रूप में

जाने जाते हैं। उनका भारतीय कथाओं पर पहला साहित्यिक सीरियल 'दर्पण' रहा। उसके अलावा 'आकाश गंगा',' रेत पर लिखे नाम', 'बिखरे पत्रे', 'विराट', 'बेताल पच्चीसी', 'युग' 'चंद्रकांता' जैसी सफलतम सीरियलों के लेखक के रूप में कमलेश्वर जाने जाते हैं।

सन् 1980 से 82 दो साल भारतीय दूरदर्शन के 'एडीशनल डायरेक्टर जनरल के रूप में कमलेश्वर ने कार्यभार सँभाला। साथ में नौ सालों तक कमलेश्वर सेंसर बोर्ड के सदस्य रह चुके है। उनके कार्यक्रम देखकर टी.वी.समालोचक, अंग्रेजी साहित्यिक-कवि, निसीम इजीकिल ने कहा है कि ''उनके कार्यक्रमों के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता क्योंकि हमारे विशेषणों का भांड़ार खाली हो जाता है।''[11]

कमलेश्वर ने राष्ट्रीय त्यौहार और महत्त्वपूर्ण घटनाओं-व्यक्तित्वों से संबंधित रनिंग कमेंट्री भी की है। जैसे पं.नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी और मदर तेरेसा की अंतिम यात्राओं के सीधे प्रसारण के प्रमुख कमेंटेटर। कमलेश्वर समय-समय पर दूरदर्शन के कार्यक्रम के लिए याद किये जाते हैं।

1.8 कमलेश्वर और उनकी फिल्में

आज कल कमलेश्वर का नाम फिल्मी दुनिया में भी बाइज्जत लिया जाता है। कमलेश्वर सबसे पहले साहित्यकार है और बाद में फिल्मकार। उनके उपन्यासों पर सफल फिल्में बनी है। ''आज हिंदी फिल्मों में कमलेश्वर एक अपरिहार्य नाम होने के साथ-साथ एक निश्चित शक्ति भी है।''[12]

कमलेश्वर अविरत रूप से लिखते हुए सही फिल्मों की तलाश में जुट गए है। आज के आधुनिक युग में भी कमलेश्वर की फिल्मों का बोलबाला हो रहा है। उनकी फिल्में इस प्रकार हैं -

'बदनाम बस्ती' यह फिल्म कमलेश्वर का 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' इस उपन्यास के आधार पर बनी है। और इस फिल्म के निर्देशक प्रेम कपूर है।

'फिर भी ' यह फिल्म 'तलाश' कहानी पर बनी है। जिसके निर्देशक शिवेंद्र सिंह है और कहानी, पटकथा, संवाद लेखन कमलेश्वर ने किया है। 'अमानुष'

फिल्म का संवाद लेखन कमलेश्वर ने किया है। जिसके निर्देशक शक्ति सामंत है। 'घड़ी के दो हाथ' फिल्म की पटकथा और संवाद लेखन कमलेश्वर ने किया है। जिसके निर्देशक बी.आर.चोपड़ा है। 'आँधी' और 'मौसम' ये दो फिल्में कमलेश्वर के 'काली आँधी' और 'आगामी अतीत' इस उपन्यास पर आधारित है। जिनके निर्देशक गुलजार है।

सारा आकाश, राम-बलराम, सौतन, मि.नटवरलाल, दि बर्निंग ट्रेन, तुम्हारी कसम, पती पत्नी और वह जैसी 99 फिल्मों का लेखन कमलेश्वर ने किया है। आज कल वे स्वर्गीय इंदिरा गांधी जी के जीवन पर बननेवाली फिल्म के संवाद लिख रहे हैं। अपने फिल्मी लेखन के बारे में कमलेश्वर स्वयं कहते हैं कि, ''जब मैं एक साहित्यिक लेखक था तब मैंने किसी को फिल्मी लेखन के लिए बैसाखी नहीं बनाया। और जो मैं आज फिल्मी दुनिया में कुछ बन पाया हूँ वह भी सिर्फ अपनी कोशिशों से। मैंने न कभी किसी का सहा लिया और लूँगा।''[13]

निष्कर्ष

आजादी के बाद जितने भी साहित्यकार हमारे सामने आये उनमें कमलेश्वर जी अग्रणी है। और हिंदी साहित्य में कमलेश्वर और उनके साहित्य का विशिष्ट योगदान रहा है। कमलेश्वर का प्रारंभिक जीवन संघर्ष से परिपूर्ण और यातनाओं से भरा हुआ नजर आता है। पर उनमें कुछ सीखने की बड़ी गहरी ललक थी। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए कमलेश्वर ने मुसिबनों का सामना किया। कालेज की पढ़ाई करते समय छोटी-मोटी कई प्रकार की नौकरियाँ उन्होंने की और उत्साह कायम रखा। कमलेश्वर का साहित्य से पहले से लगाव था, इसी कारण साहित्य-सृजन में कभी कमी नहीं आयी। एक सफल कहानीकार के रूप में हिंदी संसार उन्हें जानता ही है पर उपन्यासकार, नाटककार, समीक्षक, फिल्मकार आदि रूप में भी जानता है।

कमलेश्वर का व्यक्तित्व बड़ा ही सशक्त रहा है। उन्होंने अपने युग के सत्य को अपने साहित्य में उजागर किया है। उनका अंदाज-ए-बयान कुछ अलग किस्म का रहा है। जीवन की तमाम अच्छाइयों और बुराइयों का लेखा-जोखा उनके उपन्यासों में देखा जा सकता है। कमलेश्वर के व्यक्तित्व की विशेषताओं में असाधारण, मददगार, खुशदिल, कठोर परिश्रमी, हँसमुख तथा मीठी जबान जैसी अनेक बाते सामने आती हैं।

एक संपादक के रूप में भी कमलेश्वर की ख्याति विशेष रही है। 'सारिका' पत्रिका के संपादक कमलेश्वर ने 'सारिका' के माध्यम से नए-नए कहानीकारों को उभरने का मौका दिया। जहाँ कमलेश्वर कहानीकार के रूप में हमारे सामने आते है, वही दूसरी ओर कहानी आलोचक के रूप में भी वे उतने ही चर्चित है। उन्होंने 'नई कहानी की भूमिका' यह समीक्षात्मक ग्रंथ भी लिखा है। साथ में नई कहानी के आंदोलन को भी सफल बनाया 'सारिका' में 'मेरा पन्ना' स्तंभ के अंतर्गत कमलेश्वर का बयान विशिष्ट ढंग का रहा हैं।

दूरदर्शन पर 'परिक्रमा' का प्रसारण आम आदमी की जिंदगी का आईना रहा है। आज भी समय-समय पर दूरदर्शन से महत्त्वपूर्ण और गंभीर प्रसंगों का निवेदन (रनिंग कॉमेट्री) कमलेश्वर करते रहते हैं।

कमलेश्वर एक ऐसे उपन्यासकार है जिनके अधिकतर उपन्यासों पर हिंदी में सफल फिल्में बनी हैं। उपन्यासों पर बनी फिल्में काफी चर्चित रही और लोगों ने उन्हें पसंद भी किया है।

कमलेश्वर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कमलेश्वर सबसे पहले एक बहुत ही अच्छे इन्सान है, बाद में वे सबकुछ है। उनका व्यक्तित्व तो सशक्त साहित्यकार का है ही साथ में उनके व्यक्तित्व के कई आयाम देखे जा सकते है। कमलेश्वर ने जिस तरह की जिंदगी को जिया, उसी तरह उनका साहित्य रहा। जीवन यथार्थ उनके साहित्य में देखा जा सकता है। कमलेश्वर एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। ऐसी कोई विधा शेष नहीं रही जिस पर कमलेश्वर ने कलम नहीं चलाई हो। इसीलिए वे कमलेश्वर से 'कलमेश्वर' बन गए हैं।

संदर्भ सूची

1. कमलेश्वर, आईने के सामने, पृ.92
2. वही, पृ.98
3. (सं.)विश्वनाथ सचदेव , धर्मयुग (दुष्यंत कुमार के एक संस्मरण से) (16 अगस्त, 1994), पृ.32
4. (सं.)मधुकर सिंह , कमलेश्वर (शोरिजन के लेख 'एक में अनेक' से), पृ.369
5. वही, पृ.369
6. (सं.)मधुकर सिंह , कमलेश्वर , पृ.94,95
7. वही, पृ.6
8. (सं.)राजेंद्र यादव , कमलेश्वर : श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.
9. (सं.)मधुकर सिंह , कमलेश्वर (मनूभाई पांधी के लेख ''कमलेश्वर छोटे और आम आदमियों के रचनाकार से) पृ.372
10. (सं.)विश्वनाथ सचदेव , धर्मयुग (दुष्यंत कुमार के एक संस्मरण से) (16 अगस्त, 1994), पृ.33
11. कमलेश्वर, मेरे साक्षात्कार,पृ.294
12. (सं.)मधुकर सिंह , कमलेश्वर , पृ.344
13. कमलेश्वर, मेरे साक्षात्कार,पृ.283